# विश्वकर्मा पूजा कथा, विधि और आरती

INSTAPDF.IN

# विश्वकर्मा पूजा का महत्व

भगवान विश्वकर्मा को सभी चीजों का निर्माता माना जाता है। विश्वकर्मा जी को देवताओं के शिल्कार की उपाधि भी प्राप्त है। पुराणों के अनुसार विश्वकर्मा जी को संसार की सभी निर्जीव वस्तुओं का निर्माता कहा गया है। संसार की कोई भी चीज जिसमें प्राण नही है वह सभी चीजें विश्वकर्मा जी के ही आधीन आती हैं। चाहें वह वाहन, मकान, दुकान, फैक्ट्री या अन्य चीजें। माना तो यह भी जाता है विश्वकर्मा जी ने ही लंका, भगवान कृष्ण की द्वारिका नगरी, स्वर्गलोक, इंद्र देव का सिंहासन और इंद्रप्रस्थ का भी निर्माण किया था।

भगवान शिव के त्रिशुल का निर्माण भी विश्वकर्मा जी ने ही किया था। इसके अलावा भगवान श्री कृष्ण के कहने पर ही सुदामा के एक छोटे से घर को राजमहल बनाने का काम भी विश्वकर्मा जी ने ही किया था। इसलिए दिवाली के बाद भैया दूज वाले दिन विश्वकर्मा जी की पूजा - अर्चना की जाती है। इस दिन भगवान विश्वकर्मा जी के साथ लोग सभी निर्जीव चीजें जैसे फैक्ट्री, मशीने, वाहन आदि की भी पूजा की जाती है। जिससे की इन सभी निर्जीव चीजों को भगवान विश्वकर्मा का आर्शीवीाद प्राप्त हो सके।

INSTAPDF.IN

# विश्वकर्मा कथा

पौराणिक कथा के अनुसार एक बार ऋषि विश्वामित्र ने सभी ऋषियों और सन्यासियों को एक जगह पर बुलाकर सभा की। विश्वमित्र ने कहा कि हे आदरणीय कि राक्षस हमारे यज्ञ को नष्ट कर देते हैं और साधु संतो को अपने भोजन का ग्रास बना लेते हैं। जिसकी वजह से हमारे सभी कार्यें में विघ्न पड़ रहा है और हम पूजा - पाठ करने में भी पूरी तरह से असमर्थ होते जा रहे हैं। इसलिए इस समस्या का हमें जल्द से जल्द कोई हल तो अवश्य ही निकालना होगा। विश्वामित्र जी का बात सुनकर विशिष्ठ मुनि ने कहा कि हमें पहले भी एक बार इस प्रकार की समस्या का सामना करना पड़ा है।

उस समय हम सभी ऋषि मुनियों ने ब्रह्मा जी से इस समस्या का समाधान मांगा था। इसलिए हम सभी को ब्रह्मा जी के पास ही जाना चाहिए। यह सुनकर सभी लोग ब्रह्मा जी के पास चल दिए और ब्रह्मा जी को सारा वृत्तांत सुनाया। ब्रह्मा जी मुनियों से बोले की राक्षसों से देवता भी घबराते हैं। तो मनुष्यों की तो बात ही क्या जो जीवन और मृत्यु के चक्र में फंसे हुए हैं। इस प्रकार की समस्या का हल केवल विश्वकर्मा जी के पास है। इसलिए आप उन्हीं की शरण में जाएं।इस समय पृथ्वीं लोक पर जो यज्ञ चल रहा है उसमें मुनि अगिरा अति श्रेष्ठ हैं और वह विश्वकर्मा जी के भक्त भी हैं। वही आपकी इस समस्या को हल कर सकते हैं।

INSTAPDF.IN

यह सुनकर सभी लोग अगिरा ऋषि के पास गए। सभी साधु संतो ने अगिरा ऋषि को यह बात बताई तो उन्होंने कहा की हां विश्वकर्मा जी ही इस समस्या का हल निकाल सकते हैं आपको कहीं और जाने की जरा भी आवश्यकता नही है। इसके लिए आपको अमावस्या के दिन सभी दैनिक क्रियाओं को रोककर विश्वकर्मा जी की कथा का श्रवण करना चाहिए और उनकी उपासना करनी चाहिए। मुनि अगिरा की बात सुनकर सभी ऋषियो ने अमावस्या के दिन यज्ञ किया और विश्वकर्मा जी का पूजन करके उनकी कथा सुनी । इसके बाद विश्वकर्मा जी ने सभी राक्षसों का अंत कर दिया।

इस प्रकार सभी ऋषियों की समस्या का हल विश्वकर्मा जी ने कर दिया। इसलिए जो भी व्यक्ति पूरी श्रद्धा से भगवान विश्वकर्मा जी की पूजा करता है उसे जीवन के सभी सुख प्राप्त होते हैं।

INSTAPDF.IN

# विश्वकर्मा पूजा विधि

विश्वकर्मा पूजन कन्या संक्रांति के दिन सुबह फैक्ट्री, वर्कशाप, आफिस, दुकान आदि के स्वामी और उनकी पत्नी स्नान आदि से निवृत होकर स्वच्छ वस्त्र धारण कर लें। उसके बाद पूजा स्थान पर आसन ग्रहण करें। सर्वप्रथम दोनों लोग हाथ में जल लेकर विश्वकर्मा पूजा का संकल्प करें। इसके बाद भगवान विष्णु का ध्यान करें। उसके बाद एक कलश में पंचपल्लव, सुपारी, दक्षिणा आदि डालें और उसमें कपड़ा लपेट दें। फिर एक मिट्टी के पात्र में अक्षत् रख लें और उसे कलश के मुंह पर रखें। उस पर भगवान विश्वकर्मा की मूर्ति या तस्वीर स्थापित कर दें।

अब उनको अक्षत्, पुष्प, धूप, दीप, गंध, मिठाई आदि अर्पित करें। इसके बाद ओम आधार शक्तपे नमः, ओम कूमयि नमः, ओम अनन्तम नमः, पृथिव्यै नमः मंत्र का उच्चारण करें। उसके पश्चात औजार, मशीन आदि की भी पूजा कर लें। फिर भगवान विश्वकर्मा की कथा सुनें और अंत में आरती करें।

INSTAPDF.IN

# विश्वकर्मा जी की आरती

ॐ जय श्री विश्वकर्मा प्रभु जय श्री विश्वकर्मा।

सकल सृष्टि के कर्ता रक्षक श्रुति धर्मा ॥

आदि सृष्टि में विधि को, श्रुति उपदेश दिया।

शिल्प शस्त्र का जग में, ज्ञान विकास किया ॥

ऋषि अंगिरा ने तप से, शांति नही पाई।

ध्यान किया जब प्रभु का, सकल सिद्धि आई॥

रोग ग्रस्त राजा ने, जब आश्रय लीना।

संकट मोचन बनकर, दूर दुख कीना॥

जब रथकार दम्पती, तुमरी टेर करी।

सुनकर दीन प्रार्थना, विपत्ति हरी सगरी॥

एकानन चतुरानन, पंचानन राजे।

द्विभुज, चतुर्भुज, दशभुज, सकल रूप साजे॥

INSTAPDF.IN

ध्यान धरे जब पद का, सकल सिद्धि आवे।

मन दुविधा मिट जावे, अटल शांति पावे॥

श्री विश्वकर्मा जी की आरती, जो कोई नर गावे।

कहत गजानन स्वामी, सुख सम्पत्ति पावे॥

INSTAPDF.IN